E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
October 2022 Special Issue 06 Volume VI SJIF Impact- 5.67

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

October 2022

Special Issue 06 Volume VI

VARIOUS DIMENSIONS OF INDIAN HISTORY

Guest Editor
Dr. M. C. Arya
Head of Department, History
G.D.C. Doshapani,Nainital

Associate Editor
Dr. Jyoti Tamta
Assistant Profsser History
M. B. Govt. P.G. college Haldwani , Nainital

Co Editor
Dr. Ramandeep Kaur
S.U.S. Govt. College Sunam, Punjab

Co Editor
Ms Laxmi Basnet
Sikkim West

Akshara Publication
Plot No 143 Professors colony,
Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
October 2022 Special Issue 06 Volume VI
SJIF Impact- 5.67

Index

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
1.	Swami Vivekananda's Various Dimension as a Motivator	**Dr. Bhoop Narain Dixit**	05
2.	Reflection on the Dynamics of Peasant Protests in Bihar (1917-25)	**Dr. Sanjay Kumar** **Dr. Rakesh Istwal**	09
3.	The Socio-Economic Impact of the Industrial Revolution in Europe	**Dr. Sumit**	14
4.	History of Travel before Tourism	**Ms. Priya Bora**	17
5.	The Economic History of India	**Dr. V. Prakash**	21
6.	Freedom Struggle Movement in Indian History	**Dr. Arun Dev Singh** **Ms. Raj Kumari**	26
7.	Geographical Spread and Polity of Chaulukyas of Gujarat (c. 900 - 1300 CE)	**Dr. Ranjana Bhattacharya**	30
8.	Impact of NPAs on Financials of MPACs Tarikhet (A Case Study)	**Dr. Asha B. Parchey** **Mr.Manish Kandpal**	35
9.	Against British India Party Founded outside the Subcontinent: Sarvarajya	**Elif Gülbaş**	43
10.	मध्य हिमालयी शिल्पकार चेतना के प्रमुख स्तम्भ	**डॉ. एम. सी. आर्य**	47
11.	तत्कालीन हिन्दू–मुस्लिम एकता की अनुकरणीय मिसाल– बहादुर शाह ज़फर	**डॉ. विजय कुमार राय**	52
12.	मजदूरों की उन्नति में डॉ.बाबासाहेब अंम्बेडकर जी का योगदान	**डॉ. सन्तोष कुमार आर्य** **सुनील दत्त**	56
13.	पर्यावरण संरक्षण में जनजाति समुदाय की भूमिका: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	**डॉ. श्वेता आर्य** **शैलजा**	60
14.	औपनिवेशिक काल में कृषक विद्रोह के कारण एवं प्रभाव	**डॉ. पूनम पन्त**	65
15.	जनजाति समाज की परम्परा और क्रांति: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	**डॉ. अनुहुदा** **डॉ.गंगोत्री गबर्याल**	70
16.	ब्रिटिश कालीन उत्तराखण्ड में पत्रकारिता और स्वाधीन चेतना	**डॉ. अंजुम अली**	75
17.	महान सम्राट अशोक की सैन्य नीतियों का ऐतिहासिक विश्लेषण	**ललित सिंह**	79
18.	मध्यकालीन कुमांऊ में भू–व्यवस्था का स्वरूप	**डॉ. आशा आर्या**	84
19.	केदारखण्ड में वर्णित यमकेश्वर महादेव मन्दिर की ऐतिहासिकता एक अध्ययन	**डॉ. उमेश त्यागी**	89
20.	कालाढुँगी और नैनीताल नगर में जिम कॉर्बेट की संरक्षित धरोहर	**डॉ.सुधीर नैनवाल**	92

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
October 2022 Special Issue 06 Volume VI SJIF Impact- 5.67

13

पर्यावरण संरक्षण में जनजाति समुदाय की भूमिकाः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

शैलजा
शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

डॉ. श्वेता आर्य
. अर्थशास्त्र विभाग
कुमाऊँ विश्वविद्याल नैनीताल

सार संक्षेपः

वर्तमान समय में तेजी से घटते वनों के कारण बदलते हुए पर्यावरण को बचाने के लिए जनजाति समुदाय अहम भूमिका निभा रहा है। जनजातियों की जीवन शैली के कारण ही जल, जंगल व जमीन के संरक्षण से पर्यावरण स्वच्छ बना हुआ है। जनजाति समुदाय प्रत्येक समाज कि समाजिक संरचना का एक प्रमुख घटक हैं। जनजाति समुदाय से अधिक उनके निवास स्थान जंगल और पर्यावरण की देखभाल कोई नहीं कर सकता क्योंकि उनकी जीवन शैली और परम्परा इसी पर निर्भर करती है। इनमें वन संवर्धन, वन्य जीवों, पालतू पशुओं, जैव विविधता व कला संरक्षण करने का व्यवहार परंपरागत है। कृषि, पशुपालन और प्राकृतिक संसाधनों को अपने आर्धिकोपार्जन के साधन के रूप में विकसित करते हैं। भिन्न भिन्न जनजातियों की जीवन शैली तथा परम्परा में अंतर होते हुए भी सभी जनजातियों की जीवन शैली तथा परम्परा में पर्यावरण की भूमिका केन्द्रिय है। जनजातियॉ व्याहारिक व अनुभविक ज्ञान को परम्परा के रूप में एक पीढी से दूसरी पीढी में हस्तान्तरित करते हैं। कई मायनों में 21 वीं सदी का विकास भी इनकी सरल मगर तार्किक सोच और मजबूत परम्पराओ के आगे पिछड़ा दिखता है। यह लोग प्राथमिक चिकित्सा या उपचार के लिए प्राकृतिक वनस्पतियों का प्रयोग करते है। जनजातियों में अपने संसाधनों एंव शक्तियों को लेकर एक मजबूत समझ है।

मुख्य शब्दः समुदाय, जीवन शैली, परम्परा, पर्यावरण, तार्किक, संरक्षण।

विषय प्रवेशः

जनजाति समुदाय : जीवन शैली और परम्परा

सर्वप्रथम जनजाति क्या है व कौन है, तो जनजाति समुदाय इन्हे आदिवासी, वन पुत्र, वनवासी, गिरिजन आदि नामों से जाना जाता है अर्थात यह समुदाय वन मे निवास करता है। प्राचीन समय में जनजाति समुदाय प्राकृतिक संसाधनो से ही अपना भोजन व अन्य आवश्यक्ताओं की पूर्ति करते थे। वर्तमान में यह कृषि, पशु पालन, व्यवसाय व अन्य रोजगार से दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते है। आज भी जनजाति समुदाय अपना घर जंगल, पहाड़, पर्वत को ही मानते हैं और वन पशु इनके परिवार का हिस्सा है। **गिलिन एवं गिलिन के अनुसार** "स्थानीय आदिम समूहों के किसी भी समूह को जो कि एक सामान्य क्षेत्र में रहता हो, एक सामान्य भाषा बोलता है और एक सामान्य संस्कृति का अनुसरण करता हो, एक जनजाति कहते है।" किसी के जीने की वह शैली, तरीका या ढंग जो उसके व्यवहार आदि में दृष्टिगत होता है, वह उसकी जीवन शैली कहलाती है। जीवनशैली किसी व्यक्ति, समूह व समुदाय कि संस्कृति, रुचि, राय, व्यवहार के झुकाव की दिशा को सम्मिलित रुप से व्यक्त करता है। किसी जनजाति समुदाय की जीवन शैली से तात्पर्य जनजाति समुदाय किस प्रकार अपना जीवन यापन कर रहा है तथा जनजाति समुदाय कैसे रहते है, उनके जीवन का रहन – सहन कैसा है यह सब उनकी जीवन शैली के अन्तर्गत आता है।

परम्परा से तात्पर्य वह व्यवहार जिसमे वर्तमान पीढी पुरानी पीढी की देखा–देखी करते हुए उनके रीति–रिवाजों का अनुकरण करती है। सामान्यतया भूतकाल की उपलब्धियों (अभौतिक पदार्थो) को आगे आने वाले युगों में ले जाने या उन्हें हस्तान्तरित करना ही परम्परा कहलाता है। परम्परा के अन्तगर्त भौतिक पदार्थो का नहीं, बल्कि आदत, विचार, प्रथा, रीति–रिवाज, धर्म आदि अभौतिक पदार्थो का समावेश होता है। परम्परा हमारे व्यवहार के तरिकों का प्रतिक है। **श्री जिन्सबर्ग** के शब्दों में, परम्परा का अर्थ "उन सभी विचारों आदतों और प्रथाओं का योग है, जो व्यक्तियों के एक समुदाय का होता है, और एक पीढी से दूसरी पीढी को हस्तान्तरित होता रहता है।"

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
October 2022 Special Issue 06 Volume VI SJIF Impact- 5.67

पृथ्वी पर निवास करने वाले सभी जीवधारियों के चारों ओर पाया जाने वाला आवरण जो सभी जीव जन्तु एंव वनस्पतियों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है और साथ ही स्वयं भी से प्रभावित होता है, पर्यावरण कहलाता है। **टान्सले** के अनुसार प्रभावकारी दशाओं का वह सम्पूर्ण योग जिसमें जीव रहते हैं पर्यावरण कहलाता है। प्रत्येक जनजाति समुदाय कि जीवनशैली और परम्परा विशिष्ट होती है प्रत्येक जनजाति कि अपनी अलग वेशभूषा, आभूषण, पहनावा, खान–पान, प्रथा, रीति–रिवाज होते हुए भी सभी जनजातिय समुदाय की जीवन शैली में पर्यावरण संरक्षण की प्रवृति परम्परागत है। जनजाति समुदाय प्राचीन समय से जल, जंगल, जमीन, पहाड़, पर्वत और पशुओ की पूजा करते आ रहें हैं। साथ ही वे सूर्य, चंद्रमा और पेड़–पौधों की भी पूजा करते हैं। यह सभी बातें अलग–अलग जनजाति समुदाय के लिए अलग हो सकती है पर सभी जनजाति समुदाय किसी ना किसी रुप में पर्यावरण को पूजतें हैं, और उसका संरक्षण करते हैं। राष्ट्रीय वन नीति – 1894 व राष्ट्रीय वन नीति – 1952 में जनजातियों को जंगल विरोधी मानते हुए उनके अधिकारों में कटौती की गई। इससे जनजाति समुदाय का हित प्रभावित हुआ पर वन अधिकार अधिनियम 2006 ने जनजाति समुदाय के हितों की रक्षा करने के साथ ही यह अधिनियम उनके जीवन और आजीविका के अधिकार तथा पर्यावरण संरक्षण के अधिकार के मध्य संतुलन स्थापित करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. जनजातियों की जीवन शैली व परम्परा में पर्यावरण की भूमिका का अध्ययन।
2. पर्यावरण संरक्षण में जनजाति समुदाय की भूमिका का अध्ययन।

शोध प्रवधि

प्रस्तुत शोध पत्र उत्त्राखण्ड में जनजातियों की जीवन शैली और परम्परा में पर्यावरण की भूमिका के समाजशास्त्रीय अध्ययन के सन्दर्भ मे है राज्य में कई जनजातीय समुदाय निवास करते हैं, अतः प्रस्तुत शोध पत्र को सम्मपन्न करने के लिए निदर्शन उत्त्राखण्ड राज्य की प्रमुख जनजाति समुदाय के अध्ययन हेतु प्राथमिक व द्वितीयक आकड़ो का प्रयोग किया है। प्राथमिक आकड़ो के संग्रह के लिए मैने प्रतिचयन विधि के आधार पर सुविधानुसार राज्य की दोनो मण्डलो (कुमॉऊ व गढवाल) के एक–एक जनजाति का चयन कर स्वयं परीक्षण के अधार पर किया गया है।

1. जौनसारी जनजाति, ग्राम सहीया, ग्राम पुरोड़ी, जौनसार भाबर, जिला देहरादून का चयन किया है।
2. थारु जनजाति, ग्राम मुउेली, ग्राम खिन्गी, खटीमा क्षेत्र, जिला ऊधमसिंह नगर का चयन किया।

साथ ही देश की विभिन्न जनजातियों के अध्ययन हेतु द्वितीयक आकड़ो की सहायता भी ली गई है।

विश्लेषण एंव परिणाम :–

प्रकृति से को माता मानने वाले व जल जंगल जमीन और पर्वत को ईश्वर मानने वाली जनजातियों ने सदियो से अपनी जीवन शैली और परम्परा में पर्यावरण के महत्व को समझा है। इन जनजातियों की जीवन शैली और परम्परा एंव कुटम्ब व्यवस्था की अपनी अलग पहचान रही हैं। यह प्राकृतिक संसाधनों का उतना ही दोहन करते हैं, जिससे उनका जीवन सुलभता से चल सके। अपनी इसी कौशल, दक्षता व प्रखरता के द्वारा जनजातियों ने प्राकृतिक वातावरण को संतुलित बनाए रखा है।

जौनसारी जनजाति की जीवन शैली और परम्परा में पर्यावरण की भूमिका

1. जौनसारी जनजाति का सर्दियो के लिए पारम्परिक परिधान भेंउ से प्राप्त ऊन से र्निमित होता है। पुरुष सर्दियो में ऊनी कोट, ऊनी पाजामा (झंगोली) व ऊनी टोपी (डिगुबा) पहनते हैं। जबकि स्त्रियां ऊनी कुर्ता, ऊनी घाघरा व ढांट (एक बड़ा रुमाल) पहनती हैं।
2. जौनसारी जनजाति अपना अवास प्राकृतिक संसाधनो से बनाते हैं यह अपना घर लकड़ी और पत्थर से बनाते हैं। घर का मुख्य दूार लकड़ी का होता है, जिस पर विभिन्न प्रकार की सजावट होती है।
3. विवाह पूर्व के पिता के घर में बेटी (ध्यांति) को कार्यो का परिक्षण दिया जाता है।
4. लकड़ी और पत्थर से अपने मन्दिरों का निमार्ण करते हैं।
5. दीपावली इनका मुख्य पर्व है, जिसे यह राष्ट्रीय दीपावली के एक माह बाद मनाते हैं। इस अवसर पर यह अपने आंगन में भिमल लकड़ी का हौला जलाते हैं।
6. ऋतु परिवर्तन के अनुसार जौनसारी जनजाति अपने त्यौहार मनाते हैं – भादों के महिने में जागड़ा 'महासू' देवता का त्यौहार मनाते है।इस दिन महासू देवता को मंदिर से ले जाकर टोंस नदी में स्नान

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
October 2022 Special Issue 06 Volume VI SJIF Impact- 5.67

कराया जाता है। माघ के महिने में माघ–त्यौहार मनाया जाता है जो 11 या 12 जनवरी से प्रारम्भ हो कर पूरे माघ महिने चलता है। वैशाख (अप्रैल) माह में बिस्सू मेला वैसाखी से चार दिन तक चलता है। इन चार दिनों में चौंलीथात, ठाणा डांटा, चौरानी, नागथत, लूहनडांटा, घिरटी और नगाय डांडे इन स्थानों में मेले लगते हैं। बिस्सू मेला का मुख्य पकवान चावल से बने पापड़ (लाडू व शाकुली) है। सावन के महिने में नुणाई त्यौहार मनाया जाता है। नुणाई त्यौहार वहां मनाया जाता है जहां भेड़ पालन अधिक होता है।

7. जौनसारी जनजाति का मुख्य व्यवसाय कृषि और पशुपालन है।

थारु जनजाति की जीवन शैली और परम्परा में पर्यावरण की भूमिका

1. थारु जनजाति की महिलायें चांदी, पीतल, और कांसे के आभूषण पहनती है।

2. थारु जनजाति भी अपना अवास प्राकृतिक संसाधनो से बनाते हैं यह अपना घर लकड़ी पत्तों और नरकुल से बनाते हैं। दीवारों पर चित्रकारी होती है। प्रत्येक घर में पशुबाड़ा और घर के सामने छोटा सा पूजाघर होता है।

3. थारु जनजाति का मुख्य भोजन मछली और चावल है। ये अपने भोजन में दाल, दही, मांस और अण्डे का प्रयोग भी करते हैं।

4. इनका मुख्य पेय जाड़ है। जो एक प्रकार की मदिरा है, जिसे ये लोग चावल से बनाते है।

5. थारु जनजाति के लोग विवाह प्रायः माघ या फुलौरा दूज में करते है। लड़की विवाह के बाद एक दिन के लिए लड़के के घर जाती है फिर अपने पिता या भाई के साथ वापस आ जाती है। चैत्र या बैसाख माह में लड़की स्थाई रुप से अपने पति के घर जाती है।

6. इनक मुख्य त्यौहार माघ की खिचडी, बजहर जो ज्येष्ठ या बैसाख में बनाया जाता है और फाल्गुन पूर्णिमा में होली जो आठ दिनों तक चलती है।

7. ये लोग प्राकृतिक पौधों को औषधि के रुप में प्रयोग करते है। थारु जनजाति सांस के रोग उपचार के लिए किलमोड़ा पौधें की जड़ का प्रयोग करते हैं। खांसी के लिए तोतर में शहद मिलाकर प्रयोग करते हैं।

8. थारु जनजाति का मुख्य व्यवसाय कृषि और पशुपालन है।

उपरोक्त आकड़ो से ज्ञात होता है दोनो ही जनजाति की जीवन शैली और परम्परा में पर्यावरण का के संरक्षण का संदेश देती है। दोनो ही जनजातिय समुदाय सदैव प्रकृतिक वातावरण में रहते आए हैं इसलिए इन जनजातिय समुदाय व पर्यावरण के मध्य अत्यन्त घनिष्ट सम्बन्ध है। जौनसारी व थारु अर्थात दोनो ही जनजाति अपनी मूलभूत आवश्यकता के लिए पर्यावरण पर निर्भर करते हैं साथ ही इनके तीज, त्यौहार, मेलो व परम्परा प्रकृति के अनुसार होते है। पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बगैर जनजातियो ने अपने जीवन को हमेशा से सरल और असान बनाया है।

पर्यावरण संरक्षण में देश की विभिन्न जनजातिय समुदाय की भूमिका का अध्ययन –

जनजातियों की कुछ अनूठी परम्पराएं है जो उनकी जीवन शैली में पर्यावरण की भूमिका को दर्शाता है। जंहा आधुनिक समाज यह मानता हैं कि वन में घने जंगल में जीवन कठिन है व संसाधनो से दूरी है। जनजाति समुदाय को लोग पिछड़ा हुआ मानते हैं, क्योंकि यह आधुनिकता को नहीं अपनाना चाहते किन्तु एक ऐसी चीज है जो सबको जनजातियों से सीखना चाहिए वह है पर्यावरण संवर्धन व संरक्षण। सभी जनजातियो की जीवन शैली और परम्परा में परोक्ष या अपरोक्ष रूप मे पर्यावरण की मूख्य भूमिका है।

पनियार जनजाति (नीलगिरी, तमिलनाडु) भी प्रकृति की पूजा करते है। अपनी परम्परा के अनुसार कभी शेरों को नुकसान नहीं पहुंचाते हैं, इनके अनुसार शेर जंगलों के अभिभावक है। शेरों के प्रति सम्मान के कारण यह पनियार लोग शेरों द्वारा किए गए शिकार के अवशेष को ग्रहण करते हैं। पनियार जनजाति के लोग यह लोग काली मिर्च के बागान को बहुत पवित्र मानते है इसलिए काली मिर्च के बागान के बीच से नहीं जाते हैं।

बस्तर (छत्तीसगढ) की जनजाति पेड़ों व पशु – पक्षियों के नाम पर अपने गोत्र का नाम रखते है। जिस गोत्र से पेड़ जुड़ता है, उसकी पूजा करते हैं। इनका मानना है कि गोत्रज पेड़ को काटने या नुकसान पहुंचाना पाप है। यहां जनजातियों में बेल पेड़ से बेलसरिया गोत्र, बरगदक के वृक्ष से बड़सरिया व कसही से कश्यप गोत्र से जुडे हुए हैं। इनके गोत्र का वन्य –जीवो से भी रिस्ता है जैसे – वासुकी से नाग,

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
October 2022 Special Issue 06 Volume VI SJIF Impact- 5.67

बघेल से बाघद और कोलिहा से सियार का नाम जुड़ा है। इसी तरह हल्बा और मरार जनजाति के लोग अपना कुल देवता बेल के पेड़ को मानते हैं और अपना गोत्र बेलसरिया बताते हैं।

उरांव जनजाति (झारखण्ड) भी पेड़, लताओ और साथ ही पशुओं के नाम पर अपना गोत्र रख कर पर्यावरण का संरक्षण करते हैं। भतरा जनजाति में कश्यप गोत्र वाले कसही वृक्ष और कछुवा से अपने गोत्र का नाम रखते हैं।

सरहुल जनजाति का एक प्रमुख पर्व है। जिसे वसंत ऋतु में पतझड़ के बाद मनाया जाता है, जब आम के मंजर तथा सखुवा और महुआ के फुल सम्पूर्ण वातावरण सुगंधित होता है। प्रकृति पर्व सरहुल प्रत्येक वर्ष चैत्र शुक्ल पक्ष के तृतीय से चैत्र पूर्णिमा के दिन तक मनाया जाता है। इस पर्व में साल (सखुआ) के पेड़ का विशेष महत्व होता है। जनजातियों की परम्परा के अनुसार इस पर्व के बाद नई फसल की कटाई आरम्भ होती है। इसी पर्व से जनजातियों का नया वर्ष शुरू होता है। यह पर्व मुख्यतः झारखंड मे मनाया जाता है। इसके साथ ही मध्य प्रदेश, ओड़िसा, पश्चिम बंगाल में जनजातिय बहुल क्षेत्रों में भी बड़ी धूमधम से मनाया जाता है।

लेपचा जनजाति पहाड़ो को अर्धमानव व येती के रूप में पूजते हैं। यह लोग जटिल सामाजिक मुद्दों का समाधान भी प्रकृति के द्वारा करते है।

खोंड जनजाति के लोग कंदमूल तथा फलों पर जीवन र्निवाह करते थे। पर अब ये मुख्यतः कृषक है और इनकी कृषि तकनीक बहुत पुरानी है। इनकी अर्थव्यवस्था कृषि एंव वनों पर आधारित है। कुछ जनजाति समुदाय जैसे सौरिया पहाड़िया, माल पहाड़िया आदि लोग झुम खेती करते हैं।

उत्तर छत्तीसगढ़ में आदिवासी टुंटा पूजन करते हैं। ये आयोजन क्षेत्र में स्थापित सरना में किया जाता है। सरना अर्थात देवो का क्षेत्र जोकि पेड़ो का समूह होता है। ये लोग पेड़ो को आराध्य मानते हैं। पेड़ो का संरक्षण ही इनका मुख्य उद्देश्य है। टुंटा सरना में टुंटा गीत गा कर इंद्रदेव को प्रसन्न किया जाता है जिससे अच्छी बारिश हो।

जनजाति परम्परा में राऊड़ की प्रथा है, जो पर्यावरण संरक्षण का संदेश देती है। जंगल में एक क्षेत्र को राऊड़ बनाते हैं, जहां देव स्थापना की जाती है। राऊड़ क्षेत्र में पेड़ो की कटाई व आग लगाना पूर्णतः प्रतिबंधित होता है।

कोईच जनजाति में परम्परा में अगर यह लोग घर बनानें के लिए एक पेड़ काटते हैं तो पर्यावरण को अभार प्रकट करने के लिए दस पेड़ लगाते हैं। इनका मानना है कि जब इनका पुजारी अपनी देह त्याग करते हैं, तो उनका ज्ञान ऊर्जा के रूप में विभिन्न वनस्पतियों में प्रवेश कर जाती है। इसी कारण ये लोग फर्न, बांस और बेंत की कुछ किस्मों की मनमानी कटाई नहीं करते हैं।

मोनपा जनजाति (अरूणाचल प्रदेश) के लोग अपनी जीवनशैली व परम्परा के अनुसार अपने किसी प्रियजन की मृत्यु के बाद उनके मृत शरीर को पर्यावरण का संरक्षण करते हुए मछलीयों को भोजन के स्वरूप भेंट करते हैं। मोनपा जनजाति की इस परम्परा में बनी फिल्म वाटर ब्यूरियल को 67 वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2021 में पर्यावरण संरक्षण की श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार मिला है।

निष्कर्षः

आधुनिकता के दौर में भौतिकवादी समाज में इन जनजातियों के परम्परागत मूल्यों व सांस्कृतिक मूल्यो का हास हुआ है। इसी के साथ इनकी जीवनशैली में भी परिवर्तन आया है। वर्तमान समय में जनजातियों को पिछड़ेपन के प्रतिक में देखा जाता है, जबकि मनव समाज में जीवन शैली के कुछ प्रमुख घटक हैं जैसे – अवास, भोजन, शिक्षा व चिकित्सा। जनजातिया जीवन यापन के इन घटकों के लिए प्रकृति पर ही निर्भर करती है। ये अपना अवास पहाड़ो, घाटियों, वनों अर्थात प्रकृति के निकट बनाते हैं और अवास का निर्माण प्राकृतिक संसाधनो से करते हैं। भोजन के लिए ये खेती, पालतू पशुओं, वन्य सम्पदा और वन्य जीवो पर निर्भर करते है। आधुनिक शिक्षा से दूर जनजातिया व्याहारिक व तार्किक शिक्षा पर अधिक ध्यान देते है।

संदर्भ सूची –

1. पाण्डे, बद्रीदत्त. (1937). कुमॉऊ का इतिहासः श्याम प्रकाशन अल्मोड़ा बुक डिपो
2. पाण्डेय, ममता. (अप्रैल 1997). जनजातीय जीवन एवं वनस्पति : वन्यजाति अंक 2
3. उत्तराखंड इयर बुक, विनसर पब्लिशिंग कं0, जनवरी 2015, ISBN : 978-81-86844-13-9A

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
October 2022 Special Issue 06 Volume VI
SJIF Impact- 5.67

4. पत्रिकाएं – योजना, करूक्षेत्र, पहाड़ी।

साक्षात्कार –

1. प्रीप्रति राणा, ग्राम– सहीया, जौनसार भाबर, जिला देहरादून।
2. अनुज चौहान, ग्राम– पुरोड़ी, जौनसार भाबर, जिला देहरादून।
3. सुमन राणा, ग्राम– मुउेली, खटीमा क्षेत्र, जिला ऊधमसिंह नगर।
4. विरेन्द्र सिंह राणा, ग्राम– खिन्गी, खटीमा क्षेत्र, जिला ऊधमसिंह नगर।